Written by JAYATI BHATTACHARYA
Friday, 26 October 2012 19:50

दुर्गा पूजा और ढ़ाकी □ कदूसरे केपर्याय हैं□ ढ़ाककी आवाज कानों में पहुंचते ही माँ दुर्गा का चेहरा अपने आप आँखों केसामने आ जाता है□ ढ़ाकबजाने वाले को ढ़ाकी कहते हैं□ ढ़ाकी मूलत: पशचिम बंगाल केरहने वाले हैं□ ढ़ाकबंगाल का □ कपारंपरकिवाध यंत्र है जसिे कंधे पर लटकाकर दो पतले डंडे की सहायता से बजाया जाता है□ यह कला पीढ़ी दर पीढ़ी चलती है□ पर पता नहीं यह परंपरा कब तकचलेगी□

बंगाल में इसका सीजन वशि्वकर्मा पूजा से लेकर काली पूजा तकहोता है□ परंतु उनकी मुख्य आय दुर्गा पूजा केसमय होती है□ ढ़ाकी मूलत: बंगाल केरहने वाले हैं□ मुख्यत: मालदा ,मेदनिीपूर ,दनिाजपुर से वह आते हैं□ उत्तर 24 परगना के□ कगाँव में ढ़ाकियों की बस्ती है□ पूर्व बंगाल ;आज का बंग्लादेशद्ध से वस्थिापति होकर आये ढ़ाकियों के परविार यहां बस गये□ शुरू शुरू में इनका बहुत मान सम्मान था□ आमदनी की कमी नही थी□ अब तस्वीर बदल चुकी है□

Written by JAYATI BHATTACHARYA
Friday, 26 October 2012 19:50

ढ़ाक का प्रचलन बंगाल से ही हुआ था परंतु आज यह बंगाल की सीमाओं को तोड़कर समस्त भारतवर्ष में फैल चुका है। भारत के करीब करीब सभी शहरों में दुर्गा पूजा होती है और बंगाल से ढ़ाकी भी वहाँ पहुँचते है क्योंकि ढ़ाक के बिना तो दुर्गा पूजा हो ही नहीं सकती। ढ़ाक को दो डंडे से ही बजाया जाता है पर हर अवसर के लिए अलग थाप होती है। चक्षु दान के समय बजाये गये ढ़ाक की ध्वनि बिल्कुल अलग होती है। इसी तरह प्रात: काल माँ को जगाने ,पूजा ,भोग ,संध्या आरती ,धुनूची नाच ,संधी पूजा ,होम;हवनद्ध ,विसर्जन सभी अवसरों के लिए अलग अलग ध्वनि निर्धारित है। बदलते समय के साथ साथ आजकल कुछ ढ़ाकी तेज धुनों के प्रधानता दे रहे हैं। पहले धुनें धीमी गति की होती थीं।

दिल्ली में बहुत सारे दुर्गा पूजा होते है और सभी बारवारी ढ़ाकी जरूर बुलाते हैं। कुछ पुराने बारवारियों के तो ढ़ाकी बंधे हुए हैं। हर साल निश्चित समय पर वह पहुँच जाते हैं। ऐसा दूसरे शहरों में भी होता है। पश्चिम बंगाल से ढ़ाकी दुर्गा पूजा के पहले सभी शहरों में पहुच जाते है जैसे पटना ,इलाहाबाद ,लखनऊ ,भोपाल ,दिल्ली ,इंदौर ,मुम्बई ,हैदराबरद ,कोच्ची इत्यादि। जमशेदपुर में तो ढ़ाकियों की प्रतियोगिता होती है। कुछ को काम मिलता है कुछ को नहीं।

ढ़ाकी भूमिहीन मजदूर है जो साल भर दूसरे के खेतों में काम करते हैं। वह गरीब है। दुर्गा पूजा उनके लिए आमदनी का अवसर है। परंतु आजकल बढ़ते तकनीक का खमियाजा उन्हें भी भुगतना पड़ रहा है। बड़े-बड़े शहरों के किसी -किसी बारवारी में ढ़ाक के कैसेट से ही काम चला लिया जाता है। कुछ बारवारियों की अपनी-अपनी ढ़ाक है और ढ़ाकियों से ढ़ाक बजाना सीखकर वहां के लड़के ही बजा लेते हैं। लेकिन चड़ियों के पर से सजे ढ़ाकों को जब ढ़ाकी अपनी पारंपरिक पोशाक में बजाते है तो कुछ और ही समां होता है। जब ढ़ाकी ढ़ाक के साथ अन्य शहरों में जाने के लिए ट्रेन में सफर करते है तो बड़े ढ़ाकों की वजह से पुलिस परेशान करती है। कहीं कहीं पर काम खत्म होने के बाद उन्हें पहले से तयशुदा रकम नहीं दी जाती है। इन्हीं सब कारणों से ढ़ाकियों की आज की युवा पीढ़ी इस पारंपरिक कला को छोड़कर अन्य रोजगार की तलाश कर रही है। हां
बुजुर्ग अभी भी ढ़ाक बजाने में ही गर्व महसूस करते हैं। यदि ऐसा ही चलता रहा तो क्या बुजुर्ग इस कला को बचा पाएंगे ? आज यह कला संपूर्ण भारत में छाई है परंतु
इसके खत्म होने के आसार दिखने लगे हैं। यदि युवा आगे नहीं आएंगे तो इस कला का क्या भवष्यि होगा।

Written by JAYATI BHATTACHARYA

दुर्गा पूजा के दौरान इलाहाबाद के कर्नलगंज बारवारी में मेरी मुलाकात □ क ढ़ाकी से हुई□ उससे बातचात करने के बाद हमारी चंिता सच साबति हुई□

ढ़ाकी का नाम- कार्तकि दास□

उसका पता- उत्तर दनिाजपुर ,पोस्ट आफसि इटाहारपुर ,भद्रशीला ;पशचिम बंगालद्ध□ कार्तकि बाईस साल से इसी बारवारी में हर साल आते हैं□ इससे पहले इनके पति‍ा यहां आते थे□ पति‍ा के नधिन के बाद कार्तकि ने आना प्रारंभ कयिा□ उनके अनुसार आजकल
ढ़ाकी वास्तव में अन्य रोजगार की ओर बढ़ रहे हैं□ परविार चलाने के लि□ रूपये चाहि□ □ जनि्हें दूसरा रास्ता मलि गया उसने इस कला को छोड़ दयिा है□ उन्होने यह भी
बताया कि उन्हे कोई दूसरा रास्ता न मलिने की वजह से अभी भी ढ़ाक बजा रहे हैं□ दूसरा काम मलिते ही वह भी इसे छोड़ देंगे□ इतने साल ढ़ाक बजाने के बाद भी यह
मानसकिता वाकई डराने वाली है क्योंकि फरि तो यह परंपरा ही खत्म हो जा□गी□

कार्तकि की यह मानसकिता केवल □ क ढ़ाकी की नहीं है बलकि संपूरण ढ़ाकी समुदाय की है□ वलिुप्त होती अन्य कलाओं को बढ़ावा देकर बचाने की कोशशि की जा रही है□ अगर अभी से इस कला को भी बढ़ावा दयिा जा□ और ढ़ाकियों की आमदनी थोड़ी बढ़ जा□ तो ढ़ाकी इसे छोड़ने की कभी नहीं सोचेंगे □ फरि ढ़ाक का नाम कभी भी वलिुप्त कला में नहीं आ□गा□ {jcomments on}